International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 22-02-2026, Accepted: 25-03-2026, Published: 09-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 52-57

राखीगढ़ी और अन्य हरप्पा स्थलों का तुलनात्मक वास्तु–सामाजिक अध्ययन

अंशुल दलाल[1], डॉ. हवलदार भारती[2]
[1] शोधार्थी, इतिहास विभाग, समाजिक विज्ञान एवं भाषा संकाय, देश भगत विश्वविद्यालय, पंजाब, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक इतिहास विभाग, समाजिक विज्ञान एवं भाषा संकाय, देश भगत विश्वविद्यालय, पंजाब, भारत

सारांश
यह शोध–पत्र राखीगढ़ी सहित अन्य प्रमुख हड़प्पा स्थलों के वास्तु और सामाजिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि हड़प्पा सभ्यता में नगरीय नियोजन, निर्माण तकनीक और सामाजिक संगठन के बीच किस प्रकार का संबंध विद्यमान था तथा विभिन्न स्थलों के बीच समानताओं और भिन्नताओं का स्वरूप क्या था। पुरातात्विक साक्ष्यों, उत्खनन रिपोर्टों और स्थापत्य अवशेषों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि हड़प्पा सभ्यता में एक उच्च स्तर का मानकीकरण, सुव्यवस्थित नगर योजना और विकसित जल निकासी व्यवस्था विद्यमान थी, जो एक संगठित सामाजिक तंत्र का संकेत देती है। साथ ही धोलावीरा, कालीबंगन और राखीगढ़ी जैसे स्थलों में क्षेत्रीय भिन्नताएँ भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, जो पर्यावरणीय परिस्थितियों और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुकूल विकसित हुई थीं। सामाजिक संरचना के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि यद्यपि समाज में कुछ स्तरों पर भिन्नता विद्यमान थी, फिर भी अत्यधिक असमानता के स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलते हैं। इस प्रकार यह अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि हड़प्पा सभ्यता एक संतुलित व्यवस्था थी, जिसमें एकरूपता और विविधता दोनों का समन्वय था।

मूल शब्द: राखीगढ़ी, हड़प्पा सभ्यता, नगरीय नियोजन, सामाजिक संरचना, तुलनात्मक अध्ययन, वास्तुकला

सिंधु–सरस्वती अथवा हड़प्पा सभ्यता मानव इतिहास की प्राचीनतम नगरीय सभ्यताओं में से एक है, जिसका विकास लगभग 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व के मध्य हुआ। यह सभ्यता अपने सुव्यवस्थित नगर नियोजन, उन्नत जल निकासी व्यवस्था, मानकीकृत निर्माण पद्धति तथा विकसित सामाजिक और आर्थिक संगठन के लिए प्रसिद्ध रही है। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा और कालीबंगन जैसे स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि इस सभ्यता में जीवन अत्यंत संगठित और योजनाबद्ध था। इन स्थलों पर निर्मित सड़कों का जाल, समान आकार की पकी ईंटें, जल प्रबंधन की उत्कृष्ट व्यवस्था और सुव्यवस्थित आवासीय ढाँचे एक विकसित नगरीय संस्कृति का संकेत देते हैं। इन सभी स्थलों में राखीगढ़ी का विशेष महत्व है, क्योंकि यह अब तक ज्ञात हड़प्पा सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल माना जाता है, जो वर्तमान हरियाणा क्षेत्र में स्थित है। इसका विस्तृत क्षेत्रफल, अनेक आवासीय इकाइयाँ, शिल्प गतिविधियों के प्रमाण तथा हाल के वैज्ञानिक अध्ययनों से प्राप्त जानकारी इसे अन्य स्थलों की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण बनाती है। राखीगढ़ी न केवल नगरीय संरचना को समझने में सहायक है, बल्कि इसके माध्यम से उस समय के सामाजिक जीवन, आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक परंपराओं का भी गहन अध्ययन संभव होता है।

अब तक अधिकांश अध्ययन किसी एक स्थल पर केंद्रित रहे हैं, जिसके कारण उस विशेष स्थल की विशेषताओं का तो विस्तार से ज्ञान प्राप्त हुआ, किन्तु सम्पूर्ण सभ्यता की व्यापकता और विविधता को समझने में कुछ सीमाएँ बनी रहीं। एक ही स्थल के आधार पर पूरे समाज की संरचना का निष्कर्ष निकालना कई बार अधूरा और एकांगी सिद्ध होता है। विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित स्थलों के अपने–अपने स्थानीय परिवेश, संसाधन और सांस्कृतिक प्रभाव होते हैं, जो उनके विकास को प्रभावित करते हैं। इस कारण विभिन्न स्थलों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक हो जाता है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि इस सभ्यता में समानता अधिक थी या विविधता। इस शोध का उद्देश्य राखीगढ़ी सहित अन्य प्रमुख हड़प्पा स्थलों के बीच वास्तु और सामाजिक संरचना के संदर्भ में समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत नगर नियोजन, निर्माण शैली, आवासीय और सार्वजनिक संरचनाओं के साथ–साथ सामाजिक संगठन, आर्थिक गतिविधियों और जीवन शैली के पहलुओं का अध्ययन किया जाएगा। इस प्रकार यह प्रयास किया जाएगा कि वास्तुकला और सामाजिक व्यवस्था के बीच संबंध को समझा जा सके और यह देखा जा सके कि क्या दोनों एक–दूसरे को प्रभावित करते थे। इस अध्ययन के अंतर्गत यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि क्या हड़प्पा सभ्यता के सभी स्थलों में वास्तुकला का एक समान स्वरूप पाया जाता है या फिर विभिन्न क्षेत्रों में इसमें भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि सामाजिक संरचना सभी स्थलों पर समान थी या उसमें भी क्षेत्रीय स्तर पर परिवर्तन दिखाई देते हैं। इस प्रकार यह शोध न केवल हड़प्पा सभ्यता की एकरूपता को परखेगा, बल्कि उसकी आंतरिक विविधताओं को भी उजागर करने का प्रयास करेगा।

अध्ययन क्षेत्र

इस शोध का अध्ययन क्षेत्र सिंधु–सरस्वती अथवा हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख नगरीय स्थलों पर आधारित है, जिनमें राखीगढ़ी, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा और कालीबंगन सम्मिलित हैं। इन स्थलों का चयन उनकी प्रसिद्धि के साथ–साथ उनकी भौगोलिक स्थिति, पुरातात्विक महत्ता तथा उपलब्ध साक्ष्यों की विविधता को ध्यान में रखते हुए किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन विभिन्न क्षेत्रों में विकसित नगरीय जीवन और सामाजिक संरचना के तुलनात्मक विश्लेषण के लिए एक व्यापक आधार प्रदान करता है। राखीगढ़ी, जो वर्तमान हरियाणा क्षेत्र में स्थित है, हड़प्पा सभ्यता का अब तक ज्ञात सबसे विस्तृत स्थल माना जाता है। यहाँ के उत्खननों से प्राप्त आवासीय संरचनाएँ, पकी ईंटों से निर्मित भवन, सुदृढ़ जल निकासी व्यवस्था, विविध प्रकार के मिट्टी के बर्तन, आभूषण तथा मानव कंकाल यह दर्शाते हैं कि यह एक अत्यंत विकसित नगरीय केंद्र था। हाल के आनुवंशिक अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि यहाँ की जनसंख्या मुख्यतः स्थानीय थी, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इस क्षेत्र में सामाजिक संरचना का विकास आंतरिक रूप से हुआ था और बाहरी प्रभाव सीमित थे (शिंदे आदि, 2019; राय, शिंदे एवं कुमार, 2019)।

हड़प्पा, जो वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब क्षेत्र में स्थित है, इस सभ्यता का नाम देने वाला प्रमुख स्थल है। यहाँ से प्राप्त दुर्ग क्षेत्र, विशाल अनाज भंडार, समान आकार की पकी ईंटें तथा सुव्यवस्थित सड़कों का जाल यह प्रमाणित करता है कि यह एक संगठित प्रशासनिक और आर्थिक केंद्र था। यहाँ से प्राप्त मुहरें, लेखन चिह्न तथा व्यापारिक गतिविधियों के प्रमाण यह दर्शाते हैं कि यह नगर व्यापक व्यापारिक नेटवर्क से जुड़ा हुआ था और इसकी सामाजिक संरचना सुव्यवस्थित एवं नियंत्रित थी (केनॉयर, 1998; पोस्सेहल, 2002)। मोहनजोदड़ो, जो सिंध क्षेत्र में स्थित है, अपनी उन्नत नगरीय योजना के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यहाँ का महान स्नानागार, सुदृढ़ जल निकासी प्रणाली तथा बहुमंजिला आवासीय संरचनाएँ यह संकेत देती हैं कि यहाँ उच्च स्तर का स्थापत्य ज्ञान और सामाजिक संगठन विद्यमान था। यह स्थल इस बात का प्रमाण है कि हड़प्पा समाज में सार्वजनिक जीवन और सामुदायिक गतिविधियों का विशेष महत्त्व था (राइट, 2010)।

धोलावीरा, जो गुजरात के कच्छ क्षेत्र में स्थित है, अपनी विशिष्ट स्थापत्य शैली और जल प्रबंधन प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पत्थरों का व्यापक उपयोग, जलाशयों की श्रृंखला तथा त्रिस्तरीय नगर संरचना यह दर्शाती है कि इस क्षेत्र में पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार विशेष प्रकार का नगरीय विकास हुआ था। यह स्थल इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि किस प्रकार सीमित संसाधनों के बीच भी उन्नत नगरीय व्यवस्था विकसित की जा सकती थी (बिष्ट, 2015)। कालीबंगन, जो राजस्थान में घग्गर नदी के तट पर स्थित है, अपनी विशिष्ट संरचनाओं तथा कृषि के प्रारंभिक प्रमाणों के लिए महत्वपूर्ण है। यहाँ से प्राप्त हल के निशान यह दर्शाते हैं कि यह क्षेत्र कृषि गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था। साथ ही अग्निकुंड जैसी संरचनाएँ यह संकेत देती हैं कि यहाँ धार्मिक और अनुष्ठानिक गतिविधियों का भी विशेष स्थान था (लाल, 2003)।

इन स्थलों के चयन के पीछे प्रमुख आधार उनकी भौगोलिक विविधता है। ये सभी स्थल भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में फैले हुए हैं, जिससे यह समझने में सहायता मिलती है कि अलग–अलग प्राकृतिक परिस्थितियों ने नगरीय संरचना और सामाजिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया। उदाहरणस्वरूप, धोलावीरा का शुष्क क्षेत्र में स्थित होना और वहाँ की जल संचयन प्रणाली, जबकि मोहनजोदड़ो का नदी तट पर विकसित होना, दोनों के बीच स्पष्ट अंतर को दर्शाता है। दूसरा महत्वपूर्ण आधार इन स्थलों का पुरातात्विक महत्त्व है। ये सभी स्थल अपने–अपने क्षेत्र में विकसित नगरीय जीवन, शिल्प उत्पादन, व्यापार और सामाजिक संगठन के प्रमुख केंद्र रहे हैं। यहाँ से प्राप्त साक्ष्य न केवल स्थानीय विकास को दर्शाते हैं, बल्कि सम्पूर्ण हड़प्पा सभ्यता के व्यापक स्वरूप को समझने में भी सहायक हैं। तीसरा आधार उपलब्ध साक्ष्यों की प्रचुरता और विविधता है। इन स्थलों से प्राप्त भवन अवशेष, उपकरण, आभूषण, मानव कंकाल तथा अन्य सामग्री इस अध्ययन को ठोस प्रमाणों पर आधारित बनाते हैं। विशेषतः राखीगढ़ी जैसे स्थलों से प्राप्त नवीन आनुवंशिक साक्ष्य इस शोध को और अधिक गहन तथा बहुआयामी बनाते हैं। इस प्रकार, इन स्थलों का चयन इस उद्देश्य से किया गया है कि इनके माध्यम से हड़प्पा सभ्यता की वास्तुकला और सामाजिक संरचना के बीच संबंधों को तुलनात्मक दृष्टि से समझा जा सके। यह अध्ययन इस प्राचीन सभ्यता की एकरूपता के साथ–साथ उसकी आंतरिक विविधताओं को भी उजागर करने का प्रयास करता है।

साहित्य समीक्षा

सिंधु–सरस्वती अथवा हड़प्पा सभ्यता पर किए गए पूर्ववर्ती अध्ययनों ने इस प्राचीन नगरीय परंपरा के अनेक आयामों को स्पष्ट किया है। प्रमुख विद्वानों में केनॉयर, पोस्सेहल और राइट के कार्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। केनॉयर ने हड़प्पा सभ्यता के नगरीय विकास, शिल्प उत्पादन और सामाजिक संगठन का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है, जिसमें उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि यह सभ्यता अत्यंत संगठित और तकनीकी दृष्टि से उन्नत थी (केनॉयर, 1998)। इसी प्रकार पोस्सेहल ने हड़प्पा सभ्यता के उद्भव, विस्तार और पतन के विभिन्न चरणों का अध्ययन करते हुए यह दर्शाया कि यह सभ्यता एक विस्तृत सांस्कृतिक क्षेत्र में फैली हुई थी, जिसमें क्षेत्रीय विविधताओं के साथ–साथ कुछ मूलभूत समानताएँ भी विद्यमान थीं (पोस्सेहल, 2002)। राइट ने नगरीय संरचना, सामाजिक संगठन और पर्यावरणीय कारकों के अंतर्संबंध को स्पष्ट करते हुए यह बताया कि हड़प्पा सभ्यता का विकास केवल तकनीकी दक्षता का परिणाम नहीं था, बल्कि यह पर्यावरणीय अनुकूलन और सामाजिक समन्वय का भी परिणाम था (राइट, 2010)।

विभिन्न स्थलों पर किए गए पूर्ववर्ती शोधों ने यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक नगर की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ थीं। उदाहरण के लिए, मोहनजोदड़ो में महान स्नानागार और सुव्यवस्थित जल निकासी व्यवस्था को सार्वजनिक जीवन और स्वच्छता के महत्त्व से जोड़ा गया है। धोलावीरा में जल प्रबंधन प्रणाली और त्रिस्तरीय नगर योजना को शुष्क पर्यावरण में संसाधनों के प्रभावी उपयोग के उदाहरण के रूप में देखा गया है (बिष्ट, 2015)। कालीबंगन में अग्निकुंड और कृषि के प्रारंभिक प्रमाणों को धार्मिक और आर्थिक जीवन के महत्वपूर्ण संकेतक माना गया है (लाल, 2003)। इसी प्रकार राखीगढ़ी के उत्खननों ने आवासीय संरचनाओं, शिल्प गतिविधियों और मानव अवशेषों के माध्यम से सामाजिक संगठन के नए आयामों को उजागर किया है (शिंदे आदि, 2019)।

वास्तुकला और सामाजिक संरचना के संबंध पर विद्यमान दृष्टिकोण यह संकेत देते हैं कि हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना केवल भौतिक संरचनाओं का परिणाम नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक संगठन का प्रतिबिंब भी थी। सुव्यवस्थित सड़कों का जाल, समान आकार की ईंटों का उपयोग और जल निकासी की एकरूप प्रणाली यह दर्शाती है कि समाज में किसी प्रकार की सामूहिक योजना और नियंत्रण विद्यमान था। कुछ विद्वानों का मत है कि इस प्रकार की एकरूपता एक केंद्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था की ओर संकेत करती है, जबकि अन्य विद्वान इसे स्थानीय समुदायों के बीच समन्वित प्रयास का परिणाम मानते हैं (केनॉयर, 1998; राइट, 2010)। इस प्रकार वास्तुकला को सामाजिक संरचना की अभिव्यक्ति के रूप में देखा गया है, जहाँ भौतिक संरचनाएँ सामाजिक संबंधों और संगठन को प्रतिबिंबित करती हैं।

यद्यपि इन अध्ययनों ने हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न पहलुओं को गहराई से स्पष्ट किया है, फिर भी कुछ महत्वपूर्ण शोध अंतराल विद्यमान हैं। सबसे प्रमुख अंतराल यह है कि अधिकांश अध्ययन किसी एक स्थल पर केंद्रित रहे हैं, जिससे तुलनात्मक दृष्टिकोण का अभाव दिखाई देता है। इस कारण यह स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं हो पाया है कि विभिन्न स्थलों के बीच समानताएँ और भिन्नताएँ किस सीमा तक विद्यमान थीं। दूसरा महत्वपूर्ण अंतराल क्षेत्रीय विश्लेषण की कमी है। विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में स्थित स्थलों के पर्यावरणीय, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ भिन्न थे, किन्तु इन भिन्नताओं का समुचित विश्लेषण अभी तक सीमित रहा है। परिणामस्वरूप, हड़प्पा सभ्यता की एकरूपता और विविधता के बीच संतुलित समझ विकसित नहीं हो सकी है। इस प्रकार, प्रस्तुत शोध इन अंतरालों को ध्यान में रखते हुए एक तुलनात्मक और क्षेत्रीय दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास करता है, जिससे हड़प्पा सभ्यता की वास्तुकला और सामाजिक संरचना के बीच संबंधों को अधिक व्यापक और गहन रूप में समझा जा सके।

सैद्धांतिक ढाँचा

इस शोध में हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलों की वास्तुकला और सामाजिक संरचना को समझने के लिए एक बहुआयामी सैद्धांतिक ढाँचे का उपयोग किया गया है। यह ढाँचा नगरीय पुरातत्व, स्थानिक विश्लेषण, सामाजिक स्तरीकरण सिद्धांत, सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तथा अंतः विषयी दृष्टिकोण पर आधारित है। इन सभी दृष्टिकोणों के माध्यम से भौतिक संरचनाओं और सामाजिक संबंधों के बीच अंतर्संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

नगरीय पुरातत्व इस अध्ययन का प्रमुख आधार है। इसके अंतर्गत प्राचीन नगरों की योजना, संरचना और विकास को समझा जाता है। हड़प्पा सभ्यता के नगर सुव्यवस्थित सड़कों, जल निकासी प्रणाली और मानकीकृत निर्माण तकनीकों के लिए प्रसिद्ध हैं। इन विशेषताओं को केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं माना जा सकता, बल्कि यह एक संगठित सामाजिक व्यवस्था और नियोजन का परिणाम भी हैं। केनॉयर ने यह प्रतिपादित किया है कि हड़प्पा नगरों का नियोजन एक सुव्यवस्थित सामाजिक तंत्र का संकेत देता है, जिसमें संसाधनों और श्रम का समन्वित उपयोग हुआ था (केनॉयर, 1998)। इसी प्रकार राइट ने यह स्पष्ट किया है कि नगरीय संरचना सामाजिक संगठन और पर्यावरणीय परिस्थितियों के साथ गहराई से जुड़ी हुई थी (राइट, 2010)।

स्थानिक विश्लेषण इस शोध का दूसरा महत्वपूर्ण आधार है, जिसके माध्यम से नगर के भीतर विभिन्न संरचनाओं के वितरण और उनके आपसी संबंधों का अध्ययन किया जाता है। सड़कों की दिशा, आवासीय क्षेत्रों का विन्यास, सार्वजनिक भवनों की स्थिति और जल स्रोतों का स्थान यह संकेत देते हैं कि सामाजिक और आर्थिक गतिविधियाँ किस प्रकार संगठित थीं। पोस्सेहल के अनुसार हड़प्पा नगरों में स्थानिक व्यवस्था एक सुविचारित योजना का परिणाम थी, जो सामाजिक संगठन और प्रशासनिक नियंत्रण को दर्शाती है (पोस्सेहल, 2002)। इस प्रकार स्थानिक विश्लेषण यह समझने में सहायक होता है कि भौतिक संरचनाएँ सामाजिक संबंधों को किस प्रकार प्रतिबिंबित करती हैं। सामाजिक स्तरीकरण का सिद्धांत इस अध्ययन में विशेष महत्त्व रखता है। हड़प्पा सभ्यता में स्पष्ट वर्ग विभाजन के प्रमाण सीमित हैं, फिर भी घरों के आकार, निर्माण सामग्री, उपलब्ध वस्तुओं तथा कब्रों में अंतर यह संकेत देते हैं कि समाज पूर्णतः समान नहीं था। केनॉयर के अनुसार हड़प्पा समाज में कुछ स्तरों पर सामाजिक विभाजन अवश्य विद्यमान था, जिसे स्थापत्य और भौतिक साक्ष्यों के माध्यम से समझा जा सकता है (केनॉयर, 1998)। इस दृष्टिकोण के माध्यम से यह विश्लेषण किया जाता है कि क्या वास्तुकला सामाजिक असमानताओं को दर्शाती है और क्या यह विभाजन विभिन्न स्थलों पर समान रूप से विद्यमान था।

सांस्कृतिक पारिस्थितिकी का दृष्टिकोण यह समझने में सहायता करता है कि पर्यावरण और मानव समाज के बीच किस प्रकार का संबंध था। हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थल भिन्न–भिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में स्थित थे, जिनका उनके विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा। धोलावीरा जैसे स्थलों में जल संचयन की जटिल व्यवस्था शुष्क पर्यावरण के अनुकूलन का उदाहरण है, जबकि मोहनजोदड़ो में नदी आधारित संसाधनों का उपयोग प्रमुख था। राइट ने यह स्पष्ट किया है कि हड़प्पा सभ्यता का विकास पर्यावरणीय परिस्थितियों के साथ निरंतर अंतः क्रिया का परिणाम था (राइट, 2010)। इस प्रकार सांस्कृतिक पारिस्थितिकी यह दर्शाती है कि वास्तुकला और सामाजिक संरचना दोनों ही प्राकृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं।

अंतत: इस शोध में अंतः विषयी दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें पुरातत्व, इतिहास, मानवशास्त्र और आनुवंशिक अध्ययनों का समन्वय किया गया है। हाल के आनुवंशिक अध्ययनों ने यह संकेत दिया है कि हड़प्पा सभ्यता की जनसंख्या संरचना जटिल और बहुआयामी थी, जिससे सामाजिक संगठन के नए पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है (शिंदे आदि, 2019; नरसिंहन आदि, 2019)। पोस्सेहल और केनॉयर ने भी इस बात पर बल दिया है कि हड़प्पा सभ्यता को समझने के लिए विभिन्न स्रोतों और दृष्टिकोणों का समन्वित उपयोग आवश्यक है (पोस्सेहल, 2002; केनॉयर, 1998)। इस प्रकार यह सैद्धांतिक ढाँचा इस शोध को एक व्यापक और संतुलित आधार प्रदान करता है, जिसके माध्यम से हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलों की वास्तुकला और सामाजिक संरचना के बीच संबंधों का गहन विश्लेषण संभव हो पाता है। यह दृष्टिकोण इस सभ्यता की एकरूपता और विविधता दोनों को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

शोध पद्धति

इस शोध में हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलों की वास्तुकला और सामाजिक संरचना के तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक व्यवस्थित और बहुआयामी पद्धति अपनाई गई है। इसका उद्देश्य उपलब्ध पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर विभिन्न स्थलों के बीच समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन का मूल आधार तुलनात्मक पद्धति है। इसके अंतर्गत राखीगढ़ी, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा और कालीबंगन जैसे प्रमुख स्थलों के स्थापत्य स्वरूप, नगर नियोजन और सामाजिक संकेतकों की आपसी तुलना की जाती है। तुलनात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि हड़प्पा सभ्यता में एकरूपता किस सीमा तक विद्यमान थी और किन क्षेत्रों में विविधता देखने को मिलती है। पोस्सेहल ने भी यह संकेत किया है कि हड़प्पा सभ्यता को समझने के लिए विभिन्न स्थलों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि इससे व्यापक सांस्कृतिक स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होता है (पोस्सेहल, 2002)।

इस शोध में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया है। गुणात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत स्थापत्य संरचनाओं, नगर योजना, सामाजिक संकेतों और सांस्कृतिक विशेषताओं का व्याख्यात्मक विश्लेषण किया जाता है। वहीं मात्रात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत संरचनाओं के आकार, सड़कों की चौड़ाई, भवनों के वितरण तथा अन्य मापनीय तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। राइट के अनुसार इन दोनों दृष्टिकोणों के संयोजन से अधिक संतुलित और विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं (राइट, 2010)। इस शोध के लिए विभिन्न प्रकार के डेटा स्रोतों का उपयोग किया गया है। सबसे प्रमुख स्रोत उत्खनन रिपोर्टें हैं, जिनमें स्थलों की संरचनाओं, परतों और प्राप्त वस्तुओं का विस्तृत विवरण मिलता है। केनॉयर ने इस प्रकार की रिपोर्टों को हड़प्पा सभ्यता के अध्ययन का आधार माना है (केनॉयर, 1998)। इसके अतिरिक्त स्थापत्य अवशेष, जैसे भवनों के अवशेष, सड़कों के ढाँचे, जल निकासी प्रणाली और सार्वजनिक संरचनाएँ, इस अध्ययन के महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। नक्शे और स्थल योजनाएँ भी अत्यंत उपयोगी हैं, क्योंकि इनके माध्यम से नगर के भीतर विभिन्न संरचनाओं के स्थान और उनके आपसी संबंधों को समझा जा सकता है। विश्लेषण की विधियों में संरचनात्मक तुलना और स्थानिक संगठन का अध्ययन प्रमुख हैं। संरचनात्मक तुलना के माध्यम से विभिन्न स्थलों के भवनों, सड़कों, जल निकासी व्यवस्था और सार्वजनिक संरचनाओं की समानताओं और भिन्नताओं का विश्लेषण किया जाता है। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि क्या निर्माण पद्धतियों में मानकीकरण था या क्षेत्रीय विविधताएँ विद्यमान थीं। स्थानिक संगठन के अध्ययन के अंतर्गत नगर के भीतर विभिन्न क्षेत्रों, जैसे आवासीय भाग, सार्वजनिक स्थल और शिल्प केंद्रों के वितरण का विश्लेषण किया जाता है। पोस्सेहल के अनुसार इस प्रकार का अध्ययन सामाजिक संगठन और प्रशासनिक व्यवस्था के संकेत प्रदान करता है (पोस्सेहल, 2002)।

यद्यपि यह पद्धति व्यापक और वैज्ञानिक है, फिर भी इसके कुछ सीमाएँ हैं। सबसे प्रमुख समस्या अपूर्ण डेटा की है, क्योंकि सभी स्थलों का उत्खनन पूर्ण रूप से नहीं हुआ है और कई संरचनाएँ अभी भी भूमिगत हैं। इसके अतिरिक्त संरक्षण की समस्या भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि समय के साथ कई संरचनाएँ नष्ट हो चुकी हैं या उनकी मूल अवस्था में परिवर्तन आ गया है। राइट ने इस बात पर बल दिया है कि पुरातात्विक साक्ष्यों की अपूर्णता के कारण निष्कर्षों में सावधानी बरतना आवश्यक है (राइट, 2010)। इस प्रकार, प्रस्तुत शोध पद्धति तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक और बहुआयामी दृष्टिकोण पर आधारित है, जो हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलों की वास्तुकला और सामाजिक संरचना को गहराई से समझने में सहायक सिद्ध होती है।

वास्तुकला का तुलनात्मक विश्लेषण

हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलों की वास्तुकला का अध्ययन यह दर्शाता है कि इस सभ्यता में एक ओर उल्लेखनीय एकरूपता विद्यमान थी, तो दूसरी ओर क्षेत्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी दिखाई देती हैं। इस खंड में नगरीय नियोजन, आवासीय संरचनाएँ, सार्वजनिक भवनों तथा क्षेत्रीय विविधताओं के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

नगरीय नियोजन

हड़प्पा सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता उसका सुव्यवस्थित नगरीय नियोजन था। अधिकांश स्थलों पर ग्रिड प्रणाली का उपयोग किया गया था, जिसमें सड़कों को एक–दूसरे के समकोण पर व्यवस्थित किया गया था। इससे नगर का विन्यास अत्यंत संगठित और योजनाबद्ध प्रतीत होता है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में यह प्रणाली स्पष्ट रूप से विकसित रूप में दिखाई देती है, जहाँ मुख्य सड़कें और उनसे जुड़ी गलियाँ एक निश्चित क्रम में निर्मित थीं (केनॉयर, 1998)।

सड़कों का विन्यास भी अत्यंत सुविचारित था। प्रमुख सड़कों की चौड़ाई अधिक होती थी, जबकि गलियाँ अपेक्षाकृत संकरी होती थीं। यह व्यवस्था केवल आवागमन के लिए ही नहीं, बल्कि नगर के विभिन्न भागों के बीच संपर्क बनाए रखने के लिए भी महत्वपूर्ण थी। पोस्सेहल के अनुसार यह नियोजन किसी केंद्रीय योजना या सुव्यवस्थित सामाजिक नियंत्रण का संकेत देता है (पोस्सेहल, 2002)। जल–निकासी प्रणाली हड़प्पा वास्तुकला की सबसे उन्नत उपलब्धियों में से एक थी। लगभग सभी स्थलों पर पक्की नालियों का निर्माण किया गया था, जो घरों से निकलकर मुख्य नालियों से जुड़ती थीं। मोहनजोदड़ो में यह व्यवस्था विशेष रूप से विकसित रूप में दिखाई देती है, जहाँ ढंकी हुई नालियाँ और सफाई की सुविधा उपलब्ध थी (राइट, 2010)। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य को अत्यधिक महत्व दिया जाता था।

आवासीय संरचनाएँ

हड़प्पा सभ्यता के आवासीय ढाँचे सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। अधिकांश घर पकी ईंटों से निर्मित थे और इनमें आँगन, कमरे तथा जल निकासी की व्यवस्था होती थी। घरों का आकार और योजना एक समान नहीं थी, जिससे यह संकेत मिलता है कि समाज में कुछ स्तरों पर भिन्नता विद्यमान थी। कुछ घर बड़े और बहुखंडी थे, जबकि कुछ अपेक्षाकृत छोटे थे (केनॉयर, 1998)। निर्माण सामग्री में मुख्यतः पकी ईंटों का उपयोग किया गया, जो मानकीकृत आकार की होती थीं। धोलावीरा जैसे कुछ स्थलों पर पत्थर का भी व्यापक उपयोग देखने को मिलता है, जो वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल था (बिष्ट, 2015)। यह दर्शाता है कि निर्माण तकनीक में एकरूपता के साथ–साथ स्थानीय संसाधनों का भी उपयोग किया गया। निजी और सार्वजनिक स्थानों का स्पष्ट विभाजन भी आवासीय संरचनाओं में दिखाई देता है। अधिकांश घरों का प्रवेश सीधे मुख्य सड़कों पर न होकर गलियों से होता था, जिससे गोपनीयता बनी रहती थी। साथ ही, आँगन आधारित संरचना यह संकेत देती है कि पारिवारिक जीवन का केंद्र घर के भीतर ही स्थित था।

सार्वजनिक भवन

सार्वजनिक भवन हड़प्पा सभ्यता के सामाजिक और सामुदायिक जीवन को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। मोहनजोदड़ो का महान स्नानागार इसका सर्वोत्तम उदाहरण है, जो सामूहिक अनुष्ठानों या सामाजिक गतिविधियों का केंद्र रहा होगा। इसकी सुव्यवस्थित संरचना और जलरोधक निर्माण यह दर्शाते हैं कि सार्वजनिक जीवन में स्वच्छता और अनुष्ठान का विशेष महत्व था (राइट, 2010)।

भंडारण संरचनाएँ, जिन्हें सामान्यतः अनाज भंडार के रूप में देखा जाता है, हड़प्पा और अन्य स्थलों पर प्राप्त हुई हैं। ये संरचनाएँ इस बात का संकेत देती हैं कि कृषि उत्पादन का संचयन और वितरण एक संगठित प्रणाली के अंतर्गत होता था (पोस्सेहल, 2002)। धोलावीरा में किलेबंदी और नगर का त्रिस्तरीय विभाजन विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यहाँ नगर को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया था, जो सामाजिक और प्रशासनिक संगठन का संकेत देता है। इस प्रकार की संरचना यह दर्शाती है कि नगर के विभिन्न वर्गों या कार्यों के लिए अलग–अलग क्षेत्र निर्धारित थे (बिष्ट, 2015)।

क्षेत्रीय भिन्नताएँ

यद्यपि हड़प्पा सभ्यता में वास्तुकला का एक समान आधार दिखाई देता है, फिर भी विभिन्न स्थलों में क्षेत्रीय भिन्नताएँ स्पष्ट रूप से विद्यमान हैं। धोलावीरा की जल प्रबंधन प्रणाली इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ बड़े–बड़े जलाशयों और नहरों के माध्यम से जल संचयन की व्यवस्था की गई थी। यह शुष्क क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुसार विकसित एक विशिष्ट तकनीक थी (बिष्ट, 2015)। कालीबंगन में अग्निकुंड जैसी संरचनाएँ प्राप्त हुई हैं, जो अन्य स्थलों पर इस रूप में नहीं मिलतीं। इन संरचनाओं को धार्मिक या अनुष्ठानिक गतिविधियों से जोड़ा जाता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि क्षेत्रीय स्तर पर सांस्कृतिक विविधताएँ भी विद्यमान थीं (लाल, 2003)।

राखीगढ़ी की विशेषता उसका विशाल आकार, विस्तृत आवासीय क्षेत्र और शिल्प गतिविधियों के प्रमाण हैं। यहाँ से प्राप्त संरचनाएँ यह दर्शाती हैं कि यह एक प्रमुख नगरीय केंद्र था, जहाँ विभिन्न प्रकार की आर्थिक और सामाजिक गतिविधियाँ संचालित होती थीं (शिंदे आदि, 2019)। इस प्रकार, वास्तुकला के तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हड़प्पा सभ्यता में एक ओर मानकीकरण और नियोजन की एकरूपता थी, वहीं दूसरी ओर क्षेत्रीय आवश्यकताओं और पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार विविधताएँ भी विकसित हुई थीं। यह संतुलन इस सभ्यता की जटिलता और उसकी उन्नत सामाजिक व्यवस्था को दर्शाता है।

सामाजिक संरचना का तुलनात्मक विश्लेषण

हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलों का सामाजिक दृष्टि से अध्ययन यह संकेत देता है कि यह समाज एक ओर संगठित और नियंत्रित था, वहीं दूसरी ओर इसमें कुछ स्तरों पर विविधता भी विद्यमान थी। सामाजिक संरचना को समझने के लिए आवासीय ढाँचे, कब्रों, आर्थिक गतिविधियों, नगर व्यवस्था तथा सांस्कृतिक संकेतों का तुलनात्मक विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है। इस खंड में इन सभी पहलुओं के आधार पर सामाजिक संगठन की प्रकृति को स्पष्ट किया गया है।

सामाजिक स्तरीकरण

हड़प्पा सभ्यता में सामाजिक स्तरीकरण के स्पष्ट लिखित प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी भौतिक साक्ष्यों के आधार पर कुछ स्तरों पर सामाजिक भिन्नता का अनुमान लगाया जा सकता है। विभिन्न स्थलों पर घरों के आकार, निर्माण की गुणवत्ता तथा सुविधाओं में अंतर देखने को मिलता है। कुछ घर बड़े, बहुखंडी और सुव्यवस्थित हैं, जबकि अन्य अपेक्षाकृत छोटे और साधारण हैं। केनॉयर के अनुसार यह अंतर इस बात का संकेत देता है कि समाज पूर्णतः समान नहीं था और कुछ वर्गों को अधिक संसाधन प्राप्त थे (केनॉयर, 1998)।

कब्रों और उनसे प्राप्त वस्तुओं का अध्ययन भी सामाजिक स्तरीकरण को समझने में सहायक है। कुछ कब्रों में आभूषण, मिट्टी के बर्तन और अन्य वस्तुएँ अधिक मात्रा में प्राप्त हुई हैं, जबकि अन्य कब्रें अपेक्षाकृत साधारण हैं। यह अंतर सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक स्थिति के भेद को दर्शा सकता है। शिंदे आदि के अनुसार राखीगढ़ी से प्राप्त कब्रों के विश्लेषण से यह संकेत मिलता है कि समाज में कुछ स्तरों पर भिन्नता अवश्य थी, यद्यपि यह अत्यधिक तीव्र नहीं थी (शिंदे आदि, 2019)।

आर्थिक गतिविधियाँ

हड़प्पा सभ्यता की आर्थिक संरचना अत्यंत विकसित और संगठित थी। शिल्प उत्पादन इसका प्रमुख आधार था। विभिन्न स्थलों से मनके निर्माण, धातु कार्य, मिट्टी के बर्तन, आभूषण और अन्य शिल्प गतिविधियों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। यह संकेत देता है कि समाज में श्रम का विभाजन था और विभिन्न समूह विशिष्ट कार्यों में विशेषज्ञता रखते थे। पोस्सेहल के अनुसार इस प्रकार की शिल्प विशेषज्ञता एक संगठित आर्थिक व्यवस्था का संकेत देती है (पोस्सेहल, 2002)।

व्यापार और विनिमय प्रणाली भी अत्यंत विकसित थी। हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थलों के बीच आंतरिक व्यापार के साथ–साथ बाहरी क्षेत्रों के साथ भी संपर्क था। मोहरों, तौल माप की मानकीकृत प्रणाली तथा विदेशी वस्तुओं की उपस्थिति यह दर्शाती है कि व्यापारिक गतिविधियाँ सुव्यवस्थित थीं (केनॉयर, 1998)। यह आर्थिक संगठन सामाजिक संरचना को भी प्रभावित करता था, क्योंकि संसाधनों का वितरण इसी के आधार पर निर्धारित होता था।

सामाजिक संगठन

हड़प्पा सभ्यता के सामाजिक संगठन के विषय में विद्वानों के बीच मतभेद हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि यह समाज केंद्रीकृत व्यवस्था के अंतर्गत संचालित होता था, जिसका संकेत नगर नियोजन की एकरूपता और मानकीकरण से मिलता है। सड़कों का समान विन्यास, निर्माण सामग्री का मानकीकरण और जल निकासी प्रणाली यह दर्शाती है कि किसी प्रकार का केंद्रीय नियंत्रण विद्यमान था (राइट, 2010)।

दूसरी ओर, कुछ विद्वान इसे विकेंद्रीकृत व्यवस्था मानते हैं, जिसमें विभिन्न नगर अपने–अपने स्तर पर संगठित थे, किन्तु उनके बीच सांस्कृतिक समानता थी। पोस्सेहल के अनुसार हड़प्पा सभ्यता में एक सांस्कृतिक एकरूपता तो थी, परंतु प्रशासनिक नियंत्रण आवश्यक रूप से केंद्रीकृत नहीं था (पोस्सेहल, 2002)। प्रशासनिक संरचना के प्रत्यक्ष प्रमाण, जैसे राजमहल या शासकीय भवन, स्पष्ट रूप से नहीं मिलते हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि सामाजिक नियंत्रण संभवतः सामूहिक या स्थानीय स्तर पर स्थापित था, न कि किसी एक शासक के अधीन।

सांस्कृतिक और धार्मिक आयाम

हड़प्पा सभ्यता के सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन के संकेत विभिन्न स्थलों से प्राप्त अनुष्ठानिक संरचनाओं और प्रतीकात्मक वस्तुओं से मिलते हैं। कालीबंगन में अग्निकुंड जैसी संरचनाएँ धार्मिक अनुष्ठानों की ओर संकेत करती हैं (लाल, 2003)। मोहनजोदड़ो का महान स्नानागार भी संभवतः किसी प्रकार के धार्मिक या सामूहिक अनुष्ठान से जुड़ा हुआ था (राइट, 2010)।

प्रतीकात्मक संरचनाएँ, जैसे मुहरों पर अंकित चित्र और चिह्न, उस समय की मान्यताओं और सांस्कृतिक धारणाओं को व्यक्त करते हैं। इन प्रतीकों में पशु आकृतियाँ, योग मुद्रा में मानव आकृति और अन्य चिह्न शामिल हैं, जो धार्मिक या आध्यात्मिक विश्वासों की ओर संकेत करते हैं (केनॉयर, 1998)। इस प्रकार सामाजिक संरचना के तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हड़प्पा सभ्यता में सामाजिक संगठन सुव्यवस्थित था, जिसमें आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक तत्व परस्पर जुड़े हुए थे। यद्यपि इस समाज में पूर्ण समानता नहीं थी, फिर भी अत्यधिक असमानता के स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलते हैं, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह एक संतुलित और संगठित सामाजिक व्यवस्था थी।

तुलनात्मक निष्कर्ष

विभिन्न हड़प्पा स्थलों के वास्तु और सामाजिक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता में एक ओर उल्लेखनीय एकरूपता विद्यमान थी, वहीं दूसरी ओर क्षेत्रीय विविधताओं का भी महत्वपूर्ण स्थान था। इन दोनों पहलुओं के संतुलन को समझना ही इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है। सभी स्थलों में कुछ मूलभूत समानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। सबसे प्रमुख विशेषता मानकीकरण की है, जो निर्माण तकनीकों, ईंटों के आकार, सड़कों के विन्यास तथा जल निकासी व्यवस्था में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। अधिकांश नगरों में सुव्यवस्थित योजना के अंतर्गत सड़कों को समकोण पर व्यवस्थित किया गया था और जल निकासी की सुदृढ़ प्रणाली विकसित की गई थी। केनॉयर के अनुसार इस प्रकार की एकरूपता इस बात का संकेत देती है कि समाज में किसी प्रकार का सामूहिक नियोजन और संगठन विद्यमान था (केनॉयर, 1998)। इसी प्रकार राइट ने यह प्रतिपादित किया है कि नगरों की यह नियोजित संरचना सामाजिक समन्वय और प्रशासनिक दक्षता का परिचायक है (राइट, 2010)।

हालाँकि, इन समानताओं के साथ–साथ महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी देखने को मिलती हैं, जो मुख्यतः क्षेत्रीय अनुकूलन के रूप में प्रकट होती हैं। विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों और संसाधनों के आधार पर प्रत्येक स्थल की वास्तुकला में कुछ विशिष्ट विशेषताएँ विकसित हुईं। उदाहरण के लिए, धोलावीरा में जल संचयन की जटिल प्रणाली शुष्क पर्यावरण के अनुकूलन का परिणाम थी, जबकि मोहनजोदड़ो में नदी तट के संसाधनों का उपयोग प्रमुख था। इसी प्रकार कालीबंगन में अग्निकुंड जैसी संरचनाएँ स्थानीय सांस्कृतिक विशेषताओं को दर्शाती हैं (बिष्ट, 2015; लाल, 2003)। पोस्सेहल के अनुसार इन भिन्नताओं को समझे बिना हड़प्पा सभ्यता के वास्तविक स्वरूप को नहीं समझा जा सकता (पोस्सेहल, 2002)।

वास्तुकला और सामाजिक संरचना के बीच घनिष्ठ संबंध इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। नगरों की सुव्यवस्थित योजना, मानकीकृत निर्माण और सार्वजनिक संरचनाएँ यह संकेत देती हैं कि समाज में किसी प्रकार का संगठन, नियंत्रण और सामूहिक प्रयास विद्यमान था। आवासीय ढाँचों में अंतर और सार्वजनिक स्थलों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि सामाजिक जीवन के विभिन्न आयाम वास्तुकला में परिलक्षित होते थे। केनॉयर का मत है कि हड़प्पा सभ्यता में वास्तुकला केवल भौतिक संरचना नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक संबंधों और संगठन की अभिव्यक्ति भी थी (केनॉयर, 1998)।

हड़प्पा सभ्यता की एकरूपता और विविधता के विषय में विद्वानों के बीच व्यापक बहस विद्यमान है। कुछ विद्वान इसे अत्यधिक संगठित और एकरूप सभ्यता मानते हैं, जहाँ सभी नगर एक समान योजना के अनुसार विकसित हुए थे। इसके विपरीत, अन्य विद्वानों का मत है कि यद्यपि मूलभूत संरचनात्मक सिद्धांत समान थे, फिर भी क्षेत्रीय स्तर पर पर्याप्त विविधताएँ विद्यमान थीं। राइट के अनुसार हड़प्पा सभ्यता को एक संतुलित रूप में समझना आवश्यक है, जहाँ एकरूपता और विविधता दोनों को समान महत्त्व दिया जाए (राइट, 2010)। इस प्रकार, तुलनात्मक निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि हड़प्पा सभ्यता एक जटिल और बहुआयामी सामाजिक संरचना थी, जिसमें मानकीकरण और क्षेत्रीय अनुकूलन दोनों का समन्वय था। यही समन्वय इस सभ्यता की विशिष्टता और उसके दीर्घकालिक विकास का आधार था।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में राखीगढ़ी सहित अन्य प्रमुख हड़प्पा स्थलों के वास्तु तथा सामाजिक विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट रूप से सामने आता है कि यह सभ्यता अत्यंत संगठित, सुव्यवस्थित और बहुआयामी स्वरूप की थी। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि हड़प्पा सभ्यता में एक ओर मानकीकरण और नियोजित नगरों की स्पष्ट एकरूपता विद्यमान थी, तो दूसरी ओर भिन्न–भिन्न भौगोलिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप क्षेत्रीय विविधताएँ भी विकसित हुई थीं। नगर नियोजन, जल निकासी व्यवस्था और निर्माण तकनीकों में समानता इस तथ्य का संकेत देती है कि समाज में समन्वित संगठन और सुव्यवस्थित नियंत्रण की व्यवस्था थी, जबकि धोलावीरा, कालीबंगन और राखीगढ़ी जैसे स्थलों की विशिष्टताएँ यह स्पष्ट करती हैं कि स्थानीय आवश्यकताओं और पर्यावरणीय स्थितियों के अनुसार भिन्नताएँ भी उभरती रहीं।

तुलनात्मक अध्ययन का महत्व इस बात में निहित है कि यह एकल स्थल पर आधारित निष्कर्षों की सीमाओं को पार कर सम्पूर्ण सभ्यता की व्यापक और संतुलित समझ प्रदान करता है। विभिन्न स्थलों के तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हड़प्पा सभ्यता को केवल एकरूप या केवल विविधतापूर्ण रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह दोनों का समन्वित स्वरूप थी। इस शोध के आधार पर हड़प्पा समाज की एक नई व्याख्या सामने आती है, जिसमें इसे केवल तकनीकी रूप से उन्नत सभ्यता न मानकर एक संतुलित सामाजिक व्यवस्था के रूप में समझा जाता है। आवासीय ढाँचों, सार्वजनिक संरचनाओं और आर्थिक गतिविधियों के अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि समाज में सहयोग, संगठन और संसाधनों के संतुलित वितरण की प्रवृत्ति विद्यमान थी। यद्यपि कुछ स्तरों पर सामाजिक भिन्नता के संकेत मिलते हैं, फिर भी अत्यधिक असमानता के प्रमाण स्पष्ट नहीं हैं। भविष्य में उन्नत वैज्ञानिक विधियों और व्यापक उत्खनन से इस सभ्यता के और भी गहरे पहलुओं को समझा जा सकेगा।

संदर्भ सूची

1. केनॉयर, जे. एम. (1998). सिंधु घाटी सभ्यता के प्राचीन नगर. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. पोस्सेहल, जी. एल. (2002). सिंधु सभ्यतारू एक समकालीन दृष्टिकोण. रोवमैन अल्टामीरा।
3. राइट, आर. पी. (2010). प्राचीन सिंधुरू नगरीकरण, अर्थव्यवस्था और समाज. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. बिष्ट, आर. एस. (2015). धोलावीरारू एक अद्वितीय हड़प्पा नगर. पुरातत्व अध्ययन, 12, 45–60।
5. लाल, बी. बी. (2003). कालीबंगन और वैदिक संस्कृति के प्रारंभिक संकेत. भारतीय पुरातत्व समीक्षा, 28, 1–20।
6. शिंदे, वी., नरसिंहन, वी. एम., रोहलैंड, एन., मलिक, एस., लिप्सन, एम., नाकात्सुका, एन., एडम्स्की, एन., ब्रूमंडखोशबख्त, एन., फेरी, एम., लॉसन, ए. एम., मिशेल, एम., ओपेनहाइमर, जे., स्टेवार्डसन, के., जाधव, एन., किम, वाई. जे., चटर्जी, एम., मुंशी, ए., पन्याम, ए., एवं रीच, डी. (2019). प्राचीन हड़प्पा जीनोम में स्टेपी पशुपालकों या ईरानी कृषकों की वंशानुगति का अभाव. सेल, 179(3), 729–735. 10। ीजजचेरू / / कवप.वतह / 10.1016 / र.बमसस.2019.08.048
7. राय, एन., शिंदे, वी., एवं कुमार, एस. (2019). राखीगढ़ी से प्राप्त प्राचीन डीएनए और सिंधु सभ्यता का अध्ययन. नेचर इंडिया. https: / / www.natureasia. com / en / nindia / article / 10.1038 / nindia.2019.108
8. नरसिंहन, वी. एम., पैटरसन, एन., मूरजानी, पी., रोहलैंड, एन., बर्नार्डोस, आर., मलिक, एस., लाज़ारिडिस, आई., नाकात्सुका, एन., ओलाल्डे, आई., लिप्सन, एम., किम, ए. एम., ओलिविएरी, एल. एम., कोप्पा, ए., विदाले, एम., मेलोन, जे., वहदाती, ए. ए., फज़ेली, एच., जैनसेन, एम., एवं रीच, डी. (2019). दक्षिण और मध्य एशिया में मानव जनसंख्या का निर्माण. साइंस, 365(6457), 7487। https: / / doi.org / 10.1126 / science.aat7487